वर्ष 28, अंक 05 मई-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी ।

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है ।

शिव चरण मार्ग सिखाए, गणनाद नायनार ।
शिव सेवा समन से कर, शिव पद पाए सुखद ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सूक्ष्मम्

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 05 | मूल्य ₹ 3/- | मई - 2026

प्रधान संपादक
एम. वेंकटेश्वरन
संयुक्त संपादक
आर. जयकरन
सहायक संपादक
आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय
Shabari Siksha Samachar
R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक
Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES
Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER
0427-4265414
0427-4552100
Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
अपना रहे थे........................ 7
क्या नाम दूँ ? 8
मोबाइल की लत छूटी 10
विचारों का सफर : मन से मंजिल तक 12
साज़िश... 13
डुप्लीकेट 14
माधव शाश्वत 14
उधारी शब्द 15
सीख 15
युद्ध.............................. 16
माँ एवं मातृभूमि 17
टूटे पत्थरों सा स्नेहिल जीवन 18
घर एक मंदिर..................... 19
जब भी तुम आते हो............. 20
झरोखे से 21
गीत 21
ग़ज़ल............................. 22
हनुमन वंदन...................... 22
ग़ज़लें............................. 23
फागुन फिर आकर चला गया 24
खुशियों का रास्ता है माँ 25
ग्रीष्म से वर्षा (सॉनेट) 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
ज़िंदगी एक किताब की तरह है .. 30
फिसलना नहीं है 31
धरा को बचाओ 31
अस्तित्व और बदलाव 32
हम कुछ ना कहेंगे 32
लिख तो सकता हूँ................ 33
घनक्षरी 34
गाँव में........................... 34
काम 34
सुगर-फ्री युग 35
लगाओ........................... 35
धरती माँ......................... 36
ग़ज़ल............................. 36
अनकही बातें 37
भोले में है विश्वास 37
लुप्त हो गई ग्रामीण नजारा 38
तपना 38
गीत 39
एक कदम 39
मैं इस लिपि को 40
कौन सुनेगा ? 40
सुन 41
पाठकों के पत्र 41
नवांकुर 42
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	18-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026
ஏப்ரல்-2027	18-04-2027	01-01-2027 to 28-02-2027	05-03-2027

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.
★ D.D. *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

मानव की जिंदगी अनेकानेक घटनाओं से भरी पड़ी है । दुनिया में हर कहीं कुछ न कुछ घटनाएँ चलती रहती हैं । इरान और यूक्रेन पर हमला दुखदायक ठहरता है । बढ़ती गर्मी से तपती दुनिया में जीना बहुत ही मुश्किल लग रहा है । भारत के कुछ प्रांतों में चुनाव खतम हो चुका है । लोग चुनाव के फल जानने के लिए तत्पर लग रहे हैं । इन सब के बीच में आईपीएल क्रिकेट अपने आपके लिए एक अलग स्थान पाने के प्रयास में है ।

आईपीएल क्रिकेट मैच जो लगभग दो महीने तक चल रहा है इससे बहुत सारे अभिभावक और अध्यापक चिंतित हैं कि बच्चे ही नहीं महाविद्यालय में पढ़नेवाले छात्र भी परीक्षा की तैयारी ढंग से कर नहीं पाते हैं । छात्रों का ध्यान परीक्षा से हट जाता है और लगभग 2 महीने या उससे पहले से, उनका ध्यान आईपीएल क्रिकेट में टिका रहता है । आईपीएल के विभिन्न दलों में कुछ लोग चेन्नई सुपर किंग्स के पीछे हैं तो कुछ और लोग मुंबई इंडियंस के पक्ष में हैं ।

आईपीएल क्रिकेट मैच में आज पूरे भारत क्या दुनिया का ध्यान वैभव सूर्यवंशी पर है । करोड़ लोगों के इस देश में चयनित लोगों को क्रिकेट खेलने का मौका प्रदान किया जाता है । क्रिकेट जो खेला करते हैं उनको संपूर्ण रूप से मन लगाकर खेलना पड़ता है । उन्हीं को जीत मिलता है । 15 साल की उम्र में क्रिकेट खेलने में अपने आप को चैंपियन दर्शानेवाला इस बालक की हर मन प्रशंसा करता है । क्रिकेट के क्षेत्र में अपनी क्षमता से, अपने लिए एक महत्वपूर्ण स्थान पैदा करनेवाले वैभव सूर्यवंशी को रघुवंशी राम की कृपा सदा के लिए मिलती रहे, यही हर भारतीय की प्रार्थना है ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

अनमोल वचन

प्यार का रोग

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार –

आँखों की गलती से ही मुझे प्यार का रोग हुआ था। उनको मैं नहीं देखती तो यह रोग नहीं होता। वही आँखें आज प्रियतम को देखने के लिए रो रही हैं।

प्यार से उत्पन्न स्थिति को जाने बिना, परखे बिना उनसे प्यार करनेवाली ये आँखें आज प्रियतम के दूर हो जाने पर उनकी याद में आँसू क्यों बहा रही हैं ?

उस दिन जब प्रियतम को देखा था तब कुछ सोचे बिना उनसे प्यार करनेवाली आँखें आज स्वयं रो रही हैं। इसे देखकर हँसी आती है।

कभी भी नहीं बचने लायक काम रोग को मुझमें उत्पन्न कर मेरी ये आँखें मुझे दुख पहुँचाने के साथ, रो–रोकर खुद भी आँसू के सूख जाने पर तडप रही हैं।

सागर से भी बृहद काम रोग को मुझमें जगाकर दुख के कारण बनी मेरी आँखें, अब उनकी दूरी को सहे बिना रो–रोकर दुख से भरी पडी हैं।

मुझमें काम रोग उत्पन्न कर असीम दुख में डुबा देनेवाली मेरी आँखों का यह बेहाल तो मुझे अच्छा ही लगने लगा है।

उन दिनों में बडे प्यार से, बडी दिलचस्पी से मेरे प्रियतम को देखकर प्यार बढानेवाली मेरी आँखें, उनके वियोग में एक बूँद आँसू भी बरसानेलायक नहीं रहकर दुखी ठहर रही हैं।

मुझे अपनाने के विचार बिन, मुझे आलिंगन करने की इच्छा बिन मेरा प्रियतम तो आराम से जी रहे हैं। लेकिन उनको देखे बिना मेरी आँखें नींद नहीं अपनाती हैं।

उनके वियोग में, उनके इंतजार करते हुए मेरी आँखें सोती नहीं। उनके आ जाने पर उनको देखती हुई ये आँखें बिलकुल नहीं सोती। प्यार करनेवालों की आँखें उन्हें चैन से सोने नहीं देती हैं।

ढोल के समान मेरे मन के प्यार को मेरी ये आँखें सबको दिखा देती हैं। इन आँखों के होते हुए प्रियतम के प्रति मेरे प्यार को यह समाज जरूर पता लगा लेता है।

अपना रहे थे

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

घर से निकलकर मैं बाहर गया मैं तो पैदल जा रहा था
जाना कहाँ मुझे जाना कहाँ यह तो मैं खुद भी नहीं जानता था
समय काटने नहीं मेरे तन के लिए मुझे पैदल जाना ही था
पैर भी चल रहा था विचार भी चल रहे थे मैं भी बढ़ रहा था
आगे कौन है मेरे पीछे कौन है यह तो मैं नहीं जानता था
मुझे जाना ही था हवा खाना ही था बस चल ही रहा था
चलते-चलते मुझे पता नहीं चला मैं कितना बढ़ गया था
साथ में कोई नहीं हाथ में घड़ी भी नहीं समय का कुछ पता नहीं ।

चल रही थी धूल उडाती हुई गाड़ी अनेकानेक उस सड़क पर
चल रहे थे कुछ लोग हाथ में कुछ लिए उसे खाते हुए
लड़के भी थे जो मोटे हो गए खा-खाकर कम करने चल रहे थे
लड़कियाँ भी दो चार मिलकर वहाँ हँसती-हँसती चल रही थीं
बुजुर्ग जो ढँग से चल नहीं पा रहे थे वे भी तो आ रहे थे
हर सड़क के दोनों किनारे लोग पैदल जा रहे थे
घर में जो टहल नहीं सकते वे भी गली पर आ गए थे
उड़ती धूल और विषैली हवा सब के सब वहाँ खा रहे थे ।

सदियों के पहले हमारे बुजुर्ग जो कर रहे थे वह तो करो
सड़क पर जाने की जरूरत नहीं घर पर उसे अपना करो
गंदी मैली हवा खाने से लाभ तो कुछ भी नहीं
घर पर ही तुम कर सकते हो योग का आसन सभी
दुनिया भर अब अपना रही है योगासन तुम भी करो
एक नहीं सारे रोगों से मुक्ति पाने इसे तुम अपनाया करो
भारत की देन है बुजुर्ग इसका प्रमाण है अब तो माना करो
योगासन करके सबसे कराके इस जग में तुम सुख भरो ।

क्या नाम दूँ ?

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

और दस दिन बाकी है । दस दिन के बाद पूर्ण रूप से आज़ादी है । फिर से मेरी जिंदगी बदल जाएगी । और सुनो, पंद्रह दिन बाद, अरे उसकी शादी है । अपनी खुशी को रोक नहीं पा रहा था आकाश । किसकी शादी है ? आखिर तुम इतने प्रसन्न क्यों हो ? आकाश को रोकते हुए हर्ष ने पूछा । और किस की शादी है ? मेरे यार की नहीं, मेरी पत्नी की शादी है । अरे दस दिन में, वैवाहिक बंधन से मुझे छुट्टी मिल जाएगी । ठीक पाँच दिन बाद वह एक बार फिर से नई दुल्हन बनेगी ।

होश में हो क्या ? आखिर तुम्हारी शादी के कितने साल हुए हैं ? पाँच साल में दशा–दिशा बदल गया है ? आप दोनों की बात छोड़ो, शालिनी की बात सोचो । अभी 4 साल की बच्ची है । अपनी माँ के बिना क्या वह रह सकती है ? शादी करना बड़ी बात नहीं है, आकाश; उसे निभाना ही पति–पत्नी दोनों का विजय है । जब दो जन मिलकर एक जीव को इस दुनिया में लाते हैं तब अपनी खुशियों को त्याग कर उस जीव के लिए यानी शालिनी के लिए आप दोनों को जीना चाहिए । अंजलि शायद पागल हो सकती है लेकिन तुझे तो सोच लेना चाहिए था । अपने मित्र को पूरी तरह समझाने का प्रयास कर रहा था हर्ष ।

हर्ष तुझे भी अच्छी तरह पता है कि इन 5 सालों में एक साल भी वह मेरे साथ रह नहीं पाई थी । छोटी–छोटी बातों को लेकर लड़ना और लड़कर अपने पिताजी के घर चले जाना उसकी आदत सी रह गई थी । शालिनी के आने के बाद कम से कम मेरा यह उम्मीद रहा कि अब यह बंधन बिलकुल नहीं टूटेगा । कम से कम अपनी बेटी के लिए वह अपने आप को सुधारने का प्रयास करेगी । लेकिन वह भी नहीं हुआ । हर रोज की लड़ाई और रोक–टोक से यह अच्छा है कि अलग रह जावे और अपना जीवन आप निर्वाह कर ले । अपने जीवन की व्यथा का वर्णन कर रहा था आकाश ।

आखिर वह चाहती क्या थी ? किस बात पर लड़ रही थी और अभी आगे क्या करनेवाली है ? हर्ष ने पूछा ।

अंजलि और मेरी शादी दोनों परिवारों की सहमति से हुई थी । शादी के बाद वह यही चाहती है कि हर पल दोनों चिपे पड़े रहे । एक पल के लिए उससे दूर जाऊँ तो वह कह देती है कि मैं उससे कभी प्यार नहीं करता हूँ । हमेशा चिपकते रहना और हर बार उसे आलिंगन करते रहने से वह मान लेती है कि दोनों में प्यार है । अगर उससे मैं ज़रा भी दूर चला जाता तो पूरा गुस्सा मेरे माता-पिता पर उतार देती ।

बच्ची को भी नहीं छोड़ती, उसे खूब मार देती है । वैसे शालिनी तो बहुत अच्छी लड़की है जो हर एक से प्यार करती है । बहुत ही प्यारी बच्ची है । अपनी माता से ज्यादा उसे मेरे साथ रहने में मजा आता है । आकाश के चेहरे में अपनी बेटी के प्यार से उत्पन्न खुशी झलक रही थी । वह चुप हो गया ।

'अब उसकी शादी किससे होनेवाली है ? यह तो बताओ ।' हर्ष ने पूछा । पता नहीं कोई ड्राइवर है जो उसके पिताजी के घर के पास रहा करता है । सुनने में आया कि दोनों घंटों बातें करते रहते हैं । 10 दिन पहले जब न्यायालय में हम दोनों थे तब उसको एक फोन आया जिसमें पति के नाम से उसका नंबर अंकित था । वैवाहिक बंधन से मुक्ति पाने के पहले ही उसका नाम वह पति करके लिख रखी है । मैं अपनी हंसी रोक नहीं पाया । हंसते-हंसते आकाश ने कहा ।

हर बार एक दूसरे से चिपकते रहना प्यार नहीं होता है । एक दूसरे की भलाई में एक दूसरे के सुख में साथ देने में और एक दूसरे के लिए जीने में ही सच्चा प्यार निर्भर है । आकाश तुमने सुना होगा कि जिंदगी में सच्चा प्यार सिर्फ एक बार होता है । शादी के 5 सालों में अलग हो जाना, बच्ची हो जाने के बाद भी उसे छोड़कर किसी दूसरे मर्द के पास चले जाना, इस प्यार को मैं क्या नाम दूँ ? एक का प्यार पाने के लिए अपने पति के साथ बेटी को भी ठुकराकर जाती है । जिंदगी भर यह जवानी साथ नहीं देती है । एक दूसरे से लिपटा रहना शायद कुछ सालों के लिए संभव है । बाद में पवित्र प्यार का बंधन ही वैवाहिक जीवन को सफल बनाता है । चलो तुम अब अपनी बेटी पर ध्यान दो और उसको समझा दो कि सच्चा प्यार ही जीवन को सफल बनाने के साथ सुखमय बनाता है ।

बालकथा

मोबाइल की लत छूटी

– श्री. स्नेहा सिंह,
नोएडा,उ.प्र.

रामनगर गाँव में रहने वाला आठ साल का बहुत ही होशियार लड़का था विवेक । वह बहुत हंसमुख था और दोस्तों के साथ खेलना–कूदना पसंद करता था । एक दिन गली में क्रिकेट खेलते–खेलते वह गिर गया और उसके पैर में फ्रैक्चर हो गया । उसके पापा उसे तुरंत डाक्टर के पास ले गए । उसके पैर में प्लास्टर बांध दिया गया ।

अब विवेक खेलने नहीं जा सकता था, इसलिए वह पूरे दिन घर में बैठकर मोबाइल और टीवी देखता रहता था । मम्मी–पापा भी उसे कुछ नहीं कहते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि उसका पैर दुख रहा है ।

दिन बीतते गए । लगभग एक महीने बाद विवेक का प्लास्टर खुल गया और वह फिर से चलने लगा, लेकिन उसकी मोबाइल और टीवी की आदत छूट ही नहीं रही थी !

स्कूल से आते ही वह सीधे मोबाइल उठा लेता । मम्मी डांटती तो थोड़ी देर होमवर्क कर लेता, फिर से मोबाइल या टीवी में लग जाता ।

दोस्त उसे बुलाने आते, विवेक, चलो खेलने चलें !

लेकिन विवेक हमेशा एक ही गीत गाता, मोबाइल मेरा पक्का मित्र,
दिखाए सुंदर मजेदार चित्र,
मनोरंजन मैं करता रहूँ,
और कुछ भी न जानूँ ।

मम्मी–पापा बहुत चिंतित हो गए । उन्होंने सोचा कि यह लत खतरनाक है, कुछ करना ही पड़ेगा ।

एक दिन उन्होंने तय किया कि घर की बिजली का फ्यूज़ ही निकाल देंगे । जब तक विवेक समझ नहीं जाएगा, तब तक घर में बिजली नहीं आएगी ।

विवेक स्कूल से आया । रोज की तरह उसने पंखा चलाने की कोशिश की, लेकिन पंखा नहीं चला । मोबाइल भी बंद हो गया । वह परेशान हो गया, मम्मी, बिजली क्यों नहीं आ रही ? इसके बिना मोबाइल चार्ज नहीं होगा, टीवी भी नहीं चलेगा ।

मम्मी ने शांत होकर कहा, बेटा, थोड़ी देर में बिजली वाला आएगा । तब तक तुम कुछ और काम कर लो ।

विवेक ने बहुत जिद की, लेकिन बिजली नहीं आई । कुछ समय बाद वह दोस्तों के पास चला गया । वह उनके साथ दौड़ा, खेला, हँसा । उसे बहुत मजा आया । दो दिन तक उसने बिना मोबाइल और टीवी के समय बिताया । शुरू में उसे मुश्किल हुई, लेकिन धीरे-धीरे दोस्तों के साथ खेलने में मजा आने लगा मम्मी-पापा से बातें करना भी अच्छा लगने लगा ।

उसे समझ में आने लगा कि मोबाइल से ज्यादा मजा बाहर खेलने में है । मम्मी ने कहा, ''देखा विवेक, बिना बिजली के भी तुम रह पाए । मोबाइल-टीवी के बिना भी कितना अच्छा खेला, हँसा और मजे किए ।''

विवेक खुश होकर बोला, हाँ मम्मी, मोबाइल से ज्यादा मजा दोस्तों के साथ खेलने में आता है । अब मैं मोबाइल और टीवी में समय बर्बाद नहीं करूँगा ।

वह खुशी-खुशी गाने लगा, मोबाइल से दूर ही रहना,
गली में जाकर खेलना,
खेलते-खेलते गीत भी गाना,
मीठे-मीठे सपने सजाना

उस दिन के बाद विवेक ने मोबाइल का सीमित उपयोग करना सीख लिया और फिर से पहले जैसा मस्त, हँसमुख और चंचल बच्चा बन गया ।

करने को बहुत कुछ है करो समन तुम इस दुनिया में ।
कभी मत करो दुखदाई कार्य भर लो ऐसे तुम मन में ।।

विचारों का सफर : मन से मंजिल तक

– डॉ. नन्दकिशोर साह,
पूर्वी चम्पारण, बिहार

विचार मानव मन की वह शक्ति हैं जो हमारे व्यक्तित्व, व्यवहार और जीवन की दिशा तय करते हैं। यह किसी विषय पर गहराई से सोचने, सही–गलत में भेद करने या मानसिक रूप से किसी कार्य की योजना बनाने की प्रक्रिया है। विचार हमारे अपने नहीं, बल्कि मेहमान की तरह होते हैं, जो आते हैं और चले जाते हैं। उनका कोई घर नहीं है। वे बादलों की तरह भटकते हैं। विचार तरंगों की भांति हैं। वह मनुष्य के चित्त पर अपना प्रभाव शुभ या अशुभ के लिए छोड़ते हैं। बिना विचारों के न तो नवाचार संभव है, न ही आगे बढ़ना। जितने अधिक विचार उत्पन्न होंगे, उतनी ही नई संभावनाएँ खुलेंगी। हर बड़ी खोज की शुरुआत एक छोटी–सी चिंगारी से होती है, पर वह चिंगारी अकेले नहीं, बल्कि अनगिनत छोटे–छोटे विचारों की भीड़ से जलती है। रचनात्मक लोग इसलिए हमेशा विचारों के दरवाज़े खुले रखते हैं। वे डरते नहीं, बल्कि उन्हें न्योता देते हैं। ज्यादातर विचार अधूरे, कमजोर या बेकार लग सकते हैं, पर यही असफल प्रयास ही इतिहास की बड़ी सफलताओं की नींव बनते हैं। हर विचार, चाहे छोटा हो या बड़ा, एक संभावित बीज है। असफलता को डरने की बजाय सीखने का मौका समझें। अपने जूनियर या साथियों के विचारों को भी सम्मान दें। कभीकभी वही अगला बड़ा कदम बन जाता है।

विचार को शब्दों से आगे ले जाने से ही आपके विकास की नींव मजबूत बनती है। जब आप एक विचार को लिखते हैं, फिर उसे योजना में बदलते हैं, और अंत में उसे लागू करते हैं, तभी वह प्रगति की धड़कन बनता है। छोटे– छोटे कदम से बड़ी जीत हो सकती है। हर बात को ध्यान से सुनें, चाहे वह किसी भी स्तर का हो। विचार को कागज़ या नोट ऐप पर लिखें। लिखने से वह स्पष्ट होता है। छोटा–सा प्रयोग करें, परिणाम देखें। टीम के साथ चर्चा करें, बहुमत से बेहतर समाधान निकलता है। विचार केवल मन में रहने तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्हें पोषित करें, उन्हें परखें, और

सबसे जरूरी है कि उन पर अमल करें। तभी वह एक धड़कन, एक स्थायी ताल बन जाएगी, जो हर कदम को आगे बढ़ाएगी।

मनुष्य के दिमाग में हर दिन लगभग 50 हज़ार विचार आते है। ये विचार अक्सर छोटे-छोटे, स्वचालित और अक्सर अनजाने होते हैं, जैसे साँस लेना या यादों का धुंधला फ़्लो। इसलिए हर दिन आपके सिर में एक निरंतर विचारधारा चलती रहती है, चाहे आप उसे महसूस करें या न करें। उनमें से सिर्फ 1-2 फीसदी स्मृति में टिकते हैं, जो भावनात्मक या महत्वपूर्ण होते हैं। बाकी बहुत से विचार क्षणिक फ़्लैश की तरह गायब हो जाते हैं। जो भी विचार आते हैं, उन्हें कागज़ या नोटऐप में लिख दें। लिखते-लिखते अक्सर वो खुद ही साफ़ हो जाते हैं और दिमाग को बाँध देते हैं। जिस विचार को हम अपनाते नहीं है, वह विचार बेकार ही है। व्यक्ति अपनी सोच का गुलाम होता है। आप जैसा सोचते हैं, वैसा ही बनते है। दुःख पर ध्यान देंगे तो हमेशा दुःखी ही रहेंगे, सुख पर ध्यान देना शुरू करें। दरअसल, आप जिस पर ध्यान देते है, वह चीज सक्रिय हो जाती है। ध्यान सबसे बड़ी कुंजी है। दुख को त्याग करें। मन में विचारहीनता का भाव न पनपने दें। नकारात्मक विचारों से बचें। बुखार लगने से शरीर को इतनी क्षति नहीं होती है, जितनी की एक गलत विचार के आने मात्र से हो जाती है। जीवन का सबसे अच्छा उपहार, एक अच्छा विचार हो सकता है। सही समय पर, सही व्यक्ति से विचार करें और निर्णय का निर्माण स्वयं करें।

साज़िश...

– श्री. मनोज शाह 'मानस', नई दिल्ली

तुम साज़िश रचते गए
हम अपना समझते रहे
दूध से मक्खी निकाल
फेंकने जैसा...,
निकाल फेंक दिये... !

खैर छोड़ो... !
उन बातों का
अब क्या मायने
जो हम तुमसे
कह ना पाए... !!

अब तो...,
उन बातों के भी
कोई अर्थ नहीं
जो हमने कहा
और...,
तुम समझ ना पाये... !!

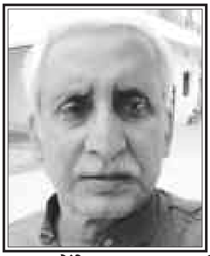

डुप्लीकेट (व्यंग्य व्यथा)

– श्री. शशि तिवारी,
गोंदिया, महाराष्ट्र

मैंने सुना था कि एक जमाने में संगीत में इतना दम था कि दीपक राग से दीपक जल जाते थे, मल्हार राग से बरसात हो जाती थी, और किसी राग को सुनकर हिरण दौड़े चले आते थे ।

एक दिन मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया यह सब किंवदन्ती नहीं सच ही था क्योंकि संध्या भ्रमण के समय एक निर्जन स्थान पर मित्र के साथ बैठकर जब मैंने अपने एक गीत को शास्त्रीय धुन के साथ गाना शुरू किया तो वहाँ एक काले रंग का कुत्ता आ गया, मैंने उसे बैठने का इशारा किया तो बैठ गया व चुपचाप गीत सुनता रहा ।

अब हाईमास्ट व डिजिटल लाईट के जमाने में भला दीपक और हिरण कहाँ... कुत्ता ही सही, यह मेरे लिए किसी उपलब्धि से क्या कम है ।

मैं तानसेन या बैजू बावरा न सही कुछ क्षण के लिये उनका डुप्लीकेट तो हो ही गया ।

माधव शाश्वत
(सवैया इंद्रविजय छंद)

– श्री. वंदना ब्रह्मभट्ट,
वडोदरा, गुजरात

ये तन हाड़ हि का इक पिंजर, चर्म मढ्यो तब सुंदर होवे ।
वृद्ध बन्यो बहु देखत कैसन, सुंदरता सब ये तन खोवे ।
मांस भर्यो तन रक्त भर्यो अति, हे मल मूत्र मवाद हि सारा ।
मानव मोहत देह परे पर, भीतर होवत गंध कि धारा ।।

देह हि दर्द व दुःख सकारण, जन्म व बंधन भी सब लावे ।
देह न शाश्वत है सुन मानव, ये तन मौत हि द्वार दिखावे ।
हे नर आतम एक हि शाश्वत, सर्व दिखे सब नाश हि सारा ।
'नेह' सुनो मह माधव शाश्वत, भक्ति हि देवत मुक्ति किनारा ।।

लघुकथा

उधारी शब्द

– श्री. रविकुमार,
बिलासपुर, हि.प्र.

अनिश द्वारा की समीक्षित पुस्तक समीक्षाएँ दो दशकों से समाचार पत्रों पत्रिकाओं में आये दिन प्रकाशित हो रही थी ।

एक युवा समीक्षक के रूप में भी साहित्य क्षेत्र में पहचाना जाने लगा था ।

एक दिन एक वरिष्ठ लेखक ने फोन पर उनके लेखक कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की । अनिश ने इसे वरिष्ठ लेखक का बड़प्पन बताया ।

फिर बातों ही बातों में नामचीन लेखक मतलब की बात पर आ ही गया । अपने सद्यप्रकाशित कविता संग्रह की स्वंय लिखित विस्तृत समीक्षा को अपने नाम से पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु भेजने का अनुरोध किया । अनिश ने उत्तर दिया, माफ करें सर, दुनिया के शब्दकोश में अभी शब्दों का अकाल नहीं है जो मैं आपसे शब्द उधार लूँ आपने गलत नम्बर डायल करदिया है यह सुनकर वरिष्ठ लेखक ऐसे मौन हो गया कि मानों उसे साँप सूंघ गया हो ।

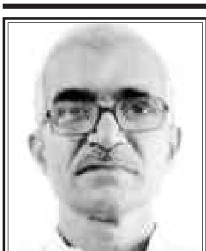

सीख

– डॉ. भगवान
प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

कौवा और कबूतर दोनों,
दाना चुगने आए ।
पेड़ पर बैठे गिल्लू भैया,
देख बहुत पछताए ।

धीरे–धीरे गौरैया ने भी,
अपना कदम बढ़ाया ।
इसे देखकर गिल्लू ने भी,
साहस कुछ दिखलाया ।

चारों ने अब मिलजुल कर,
चुगा देर तक दाना ।
आपस में हिलमिल रहने का,
अच्छा अनुभव जाना ।

साथ रहोगे तुम सब यूँ ही
कष्ट नहीं पाओगे ।
सीख पक्षियों से न लिए तो,
मन में पछताओगे ।

युद्ध

– डॉ. अवधेश
कुमार चंसौलिया,
ग्वालियर, म.प्र.

जब से जन्मा है ब्रह्माण्ड
अहर्निश चल रहे हैं युद्ध ।
टकराते हैं गृह–नक्षत्र
टकराते हैं बादल ।
और टूटते हैं पर्वत ।
तोड़ देती हैं नदियाँ तटबंधों को ।
युद्ध होते हैं पशुओं में, पक्षियों में ।
लेकिन ये युद्ध अधिक खतरनाक नहीं होते
जितने खतरनाक होते हैं आदमियों के ।
ऐसे ही होते हैं युद्ध
स्वजनों में, अपरिचितों में ।
होते हैं युद्ध जातियों में
अंतरजातियों में ।
राष्ट्र में और विभिन्न राष्ट्रों में ।
होते हैं युद्ध अपने आपसे भी ।
आदमी लड़ रहा है रोज अपने से भी ।
युद्ध होते हैं फिर युद्ध विराम भी होते हैं ।
नष्ट होता है सब कुछ
धन–दौलत, ऐश्वर्य, मान–सम्मान ।
चीखते हैं बच्चे, बूढ़े और जवान ।
मर जाते हैं सारे नैतिक मूल्य
और हो जाता है सभ्यता–संस्कृति का
समूल नाश ।
भूख से तड़पते बच्चे, विधवाओं के विलाप
माता की ममता रोती है सर्वाधिक ।
और रोती है धरती क्योंकि सबसे अधिक प्रहार
आखिर झेलती तो पृथ्वी ही है ।
रोता है आसमान और अंत में दम घुटने से
हो जाती है मृत्यु उसकी भी ।
लेकिन तब भी नहीं सुधरता आदमी ।
क्योंकि आदमी में अक्ल जरूरत से कुछ ज्यादा होती है ।
लेकिन धीरे धीरे फिर सृजन के द्वार खुलते हैं ।
और फिर होने लगता है सभ्यता का विकास ।
शायद इसी को जिजीविषा कहते हैं ।

माँ एवं मातृभूमि

(देशभक्ति काव्य तरंग)

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद
सिंह, मधुबनी, बिहार

माँ से भी बड़ी, मातृभूमि होती है,
हर माँ के मन का यह विचार है ।
हर बेटा पर माँ से पहले साथियों,
होता मातृभूमि का ही अधिकार है ।
माँ से भी बड़ी...

माँ से जितना प्यार एक बच्चा करता,
माँ मातृभूमि से करती ज्यादा प्यार है ।
हर माँ अपने बेटे को सीमा पे भेजती,
माँ को बेटे की कुर्बानी भी स्वीकार है ।
माँ से भी बड़ी...

माँ की नजरों में पहले मातृभूमि आती,
फिर उनका अपना, कोई घर परिवार है ।
माँ का यह विचार सबसे ऊपर होता है,
बेटा समझे तो, सपना माँ का साकार है ।
माँ से भी बड़ी...

माँ ने स्थान अपना, सदा नीचे माना है,
दिल माता का, कहता यह बार-बार है ।
मातृभूमि हेतु माँ का अपना कर्तव्य है,
जो समझे इशारा, बेटा वह समझदार है ।
माँ से भी बड़ी...

बेटा पीठ नहीं दिखाना, माँ कहती है,
सीना आगे करना, जहाँ तलवार है ।
सीमा पे शहादत, सौ जन्म समान है,
दिन-रात जहाँ, गोलियों की बौछार है ।
माँ से भी बड़ी...

बहादुर बेटे पर, माँ को गर्व होता है,
कायर बेटे को हमेशा ही, धिक्कार है ।
माँ चाहती, बेटा मनोज पाण्डेय बने,
तिरंगा की पुकार, माँ की पुकार है ।
माँ से भी बड़ी...

टूटे पत्थरों सा स्नेहिल जीवन

– डॉ. सत्येंद्र कुमार सिंह
@ डॉ. सत्येंद्र सुमन,
पटना, बिहार

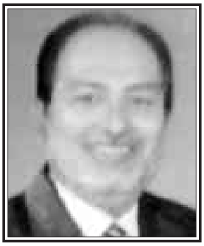

चौरासी लाख योनियों का आराधन,
तपी मानव का तिमिर तप–साधन ।
शूल भरा दायाँ शुष्क, चूने भरा बायाँ सीलन,
बुनते अपने हाथों कफन, कब्र होने को दफन ।
टूटे पत्थरों–सा स्नेहिल जीवन ।।
संचित सुख बजती वेणु सुरीली,
किंचित दुख झेलती उम्र हठीली ।
सिमसिमाती शाम संवरती डगर नुकीली,
सिसकती सुबह लरजती सफर नीली–पीली ।
पसरी तपती दुपहरी, लगती कंपकंपी ठिठुरन,
मरण के वरण, जन्मे के नयन, पूजन–अर्चन ।
टूटे पत्थरों–सा स्नेहिल जीवन ।।
उधर कलपती धूप, उधर मलकती शीतल छाया,
बीचोंबीच, तपती, मचलती, इतराती मुखर अर्द्धकाया ।
जिसका साया, रेतीली दुश्वारियों का करता सत्कार,
क्यों गगन दुआरे, सितारे बीच मचा करुण–चीत्कार ।
रह–रह आस बंधाता, आशा का वरदान–
अभी उजड़ा, कभी बसेगा नंदन–वन,
होगा यामिनी में कामिनी संग मधुर मिलन ।
टूटे पत्थरों सा स्नेहिल जीवन ।।
अलपता,
भले खेलता–मस्ताना यौवन डोल फता
गहन गुठली फाड़ सघन वृक्ष पनपता
जिसकी डाल भनभनाता मधुमक्खी छत्ता
तभी स्वीकार्य मानव–जीवन महत्ता ।
धर्म, दर्शन, अध्यात्म, चिंतन–मनन
शाश्वत प्रश्न है जग बंधन, वक्षस्थल नर्तन
आत्म सचेतन, महज विशद विवेचन ।
टूटे पत्थरों–सा स्नेहिल जीवन ।।

घर एक मंदिर

-श्री. मोनिका डागा
'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

आनंद अपनत्व से भरपूर प्यारा-सा परिवार,
मिलें जहाँ बुजुर्गों का सान्निध्य छोटों का चटकार,
जीवन किताब के हर कोरे पन्ने को जो चमकाएँ,
त्याग तपस्या पवित्र भावनाएँ धरोहर व संस्कार ।

हो अगर यहाँ सच्चा प्रेम विश्वास समर्पण कनिका,
तो खिलती खूबसूरत रिश्तों की कोमल कलिका,
घर की नींव स्तंभ को बलशाली और पुष्ट बनाएँ,
आशीष अनुभव आपसी सूझबूझ की चंद्रिका ।

सुख-दुःख हर एक घड़ी गर्माहट भरा ही आलिंगन,
अपनों के साथ से तो चल पड़ता है रुका जीवन,
सदस्यों की रंगी फुलवारी को पल-पल ही महकाएँ,
घर की नींव मान-सम्मान वट वृक्ष हरा-भरा आँगन ।

घर एक मंदिर मन की पवित्रता करती यहीं निवास,
यहाँ पनपते हैं जीवन रंगमंच के आत्मिक एहसास,
अपनी कुटिया को स्वर्ग से भी सुंदर संवारे सजाएँ,
सदस्यों की भूमिका हैं खास स्पंदन दिल के पास ।

घर जहाँ थके कंधों को मिलता स्नेहिल सहारा,
जिसकी दीवारों में गूँजता है नेह संगीत प्यारा,
सपनों को साकार करने का दम-खम भी दिलाएँ,
प्रतिकूलता को पीछे छोड़ बहे एकल जीवन धारा ।

जब भी तुम आते हो...

– श्री. मनीष उपाध्याय,
नेहू, शिलांग

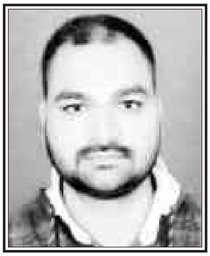

तुम जब भी आते हो समय रुक सा जाता है,
लगता है जैसे कि घड़ी की सुई तुम्हारी उपस्थिति में मौन हो गई है,
जैसे प्रकृति का रुख तुमने आते ही
बदल दिया हो,
जैसे हवा में मदहोशी कि तुमने
मिलावट की है,
जैसे सूरज को बादल में छिपने को तुमने कहा है,
जैसे फूलों को महकने को तुमने कहा है,
जैसे झरनों को बहने से रुकने को
तुमने कहा है,
जैसे चंदा को छिपकर देखने को
तुमने विवश किया है,
तुम आते हो तो सभी कुछ कितना अच्छा लगता है,
तुम रहते हो तो मुझे प्रकृति का
हर स्पंदन सुनाई पड़ता है,
तुम रहते हो तो मुझे हर पल मुझे कितना
कुछ नया लगता है,
तुम आते हो तो ऐसे लगता है जैसे वसंत आता है,
तुम चलते हो साथ जैसे पवन चलता है,
तुम्हारे होने से ही मेरा होना है,
अंततः तुममें खोकर ही तुमसा होना है,
करता हूँ याद मैं हर उस बीते लम्हों को,
भिगोता हूँ कभी रुमाल तुम्हारे
मधुर स्मृतियों में,
तुम जो भी हो ऐसे ही जीवन में बने रहना,
दुनियाँ में रहते हुए भी तुम मुझे
छिपते हुए मिलना,
ये सब्र तुम्हारी बहुत काम आएगी,
एक दिन जैसे मेंहदी सी लाली लाएगी,
रखो तुम मुझे संभाल कर जैसे माँ शिशु को संभालती है,
मैं तुम्हें सम्पूर्ण मिलूँगा जैसे मोती
मिले तलाश से ।

झरोखे से

– श्री. मनोहर सिंह चौहान मधुकर,
जावरा, रतलाम, म.प्र.

खयाल न मिले तो उनसे सुबह शाम ठनती रही ।
बात महोब्बत की हो बहुत खूब बनती रही ।।
हम जब भी जिससे भी मिले महोब्बत से मिले ।
पागल दुनिया हमको देखकर जलती रही ।।
हमने बिछाए उनके लिए महोब्ब्त के कालीन ।
हसीं लोग आए बैठे महफ़िल चलती रही ।।
हमने दिया जब किसी को महोब्बत का वास्ता ।
दिलों में दोनो के रोशनी एक जलती रही ।।
हम अच्छाई की निस्बत हरदम लूटते रहे ।
काम भी हुए दुनिया बेवकूफ कहती रही ।।
जाने किस मिट्टी के हम बने थे रुके नहीं ।
मंजिल मिलने तक मनोहर कोशिश चलती रही ।।

गीत

– श्री. मनोहर सिंह चौहान मधुकर,
जावरा, रतलाम, म.प्र.

कभी यूंही मेरे मीत, छत पर आया करो ।
ये प्रेमी नादान है, इसे न सताया करों ।।
आँख टिकी हैं लोगो की, प्रिये हम पर हरदम ।
हाथ हिलाया करो सदा, तुम मुस्कराया करो ।।
मीठे ख्याल है काफी, जिंदगी कट जाएगी ।
कभी पास आ नजर से, नजर मिलाया करो ।।
गर सच्चा प्रेम हो न हो, मीत हमें गम नहीं ।
मैं प्रेम के भ्रम में रहूँ, तुम मुकर जाया करो ।।
ये नशा प्यार का मुझपे, सदा चढ़ा ही रहे ।
भले प्रेम के तुम झूठे, पाठ पढ़ाया करो ।।

गज़ल

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

इस बात का कोई अफ़सोस न कीजिए ।
जो गिर गया दिल से उसे गिरने दीजिए ।
जो अपना है वो लौटकर आयेगा जरूर,
जो लौट कर न आए उसे मत ढूँढिए ।
दिल को जख्म देनेवाले मिलेंगे बहुत,
कोई न सिलेगा खुद ही सिल लीजिए ।
यह पूरी दुनिया बस गमों का समुद्र है,
यहाँ हर ग़म को खुशी–खुशी पीजिए ।
रिश्ते अगर निभे तो प्यार से निभाइए,
नफ़रतों के पानी से इन्हें मत सींचिए ।
जो ज़िन्दगी मिली है बहुत अनमोल है,
उम्र की गाड़ी को खुशी–खुशी खींचिए ।
सत्य को सत्य कहने की जरूरत नहीं,
झूठ झूठ ही रहेगा कितना भी चींखिए ।
खुद को हैवानियत से आज़ाद करो जरा,
इंसान हो इंसान बन इंसानियत सीखिए ।

हनुमन वंदन

– श्री. संजय शर्मा,
आगरा, उ.प्र.

प्रभु देख प्रसन्न सुखी हनु ने,
गुणगान किए सब कृत्य भली ।
कब अक्षय मार दिया पल में,
कब धू कर स्वर्णिम लंक जली ।

सुनते मटकाकर नैनन को,
कपि ऋक्ष सभी हनु कृत्य किए ।

नम नैनन से उर से अपने,
प्रभु राम लगा हनुमान लिए ।

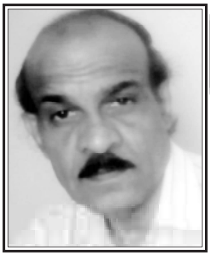

गज़लें

– श्री. नवीन माथुर पंचोली,
अमझेरा, धार, म.प्र.

– 1 –

हम किसी से अगर नहीं मिलते ।
लोग सब इस क़दर नहीं मिलते ।
मंज़िले आसपास हैं लेकिन,
रास्ते मुख्तसर नहीं मिलते ।
चाहते हैं उड़े ऊँचाई तक ।
पर परिंदों से पर नहीं मिलते ।
और कुछ साथ-साथ रह लें अब,
साथ ये उम्र भर नहीं मिलते ।
आज ठहरेंगे हम सरायों में ।
दूर बस्ती में घर नहीं मिलते ।
दूर जाना है जब अकेले ही,
राह भर हमसफ़र नहीं मिलते ।

– 2 –

साथ जैसे किताब रखते हो ।
ख़ूब हाज़िर जवाब रखते हो ।
रोशनी की तुम्हें कमी कैसी,
पास जब महताब रखते हो ।
कब कहाँ है हमें लेना-देना,
सब जुबां पर हिसाब रखते हो ।
पास गुजरो हवा महक जाए,
साँसे अपनी गुलाब रखते हो ।
हम इसी बात के रहे कायल,
दोस्ती लाजवाब रखते हो ।

– 3 –

वही तो काम का नहीं होता ।
कि जिससे वास्ता नहीं होता ।
मंजिलें सब नज़र में आती हैं,
ख़त्म बस रास्ता नहीं होता ।
सभी का हालचाल है लेकिन,
पता बस आपका नहीं होता ।
हमारी आपसी लड़ाई में,
मज़ा भी जीत का नहीं होता ।
सुलह बात रोज करते हैं,
मग़र कुछ फ़ैसला नहीं होता ।

– 4 –

वो निग़ाहों को रोज़ छलता है ।
चाँद छुप छुप के जो निकलता है ।
मैं यहाँ उसकी राह तकता हूँ,
वो वहाँ रास्ता बदलता है ।
रोज़ सूरज सा मैं दहकता हूँ ,
वो किसी बर्फ़ सा पिघलता है ।
है उसे और सब यक़ीन मग़र,
वो मेरी बात पर संभलता है ।
है ख़ता बार बार ये उसकी,
वो किसी और पर मचलता है ।

– 5 –

जितने हमको भाए रिश्ते ।
उतने ही भरमाए रिश्ते ।
जितनी उनकी खैर खबर की,
उतने ही उकताए रिश्ते ।
इधर हमारी रही मुसीबत,
और उधर मुस्काए रिश्ते ।
गैरों की बातों में आकर,
आपस में टकराए रिश्ते ।
गैरों से मिलना-जुलना पर,
अपनों से कतराए रिश्ते ।

– 6 –

समय के फल नहीं भूले ।
खुशी के पल नहीं भूले ।
सभी के साथ में रहकर,
बिताए कल नहीं भूले ।
पहुँच कर इस ऊँचाई तक,
जमीं के तल नहीं भूले ।
सभी मुश्किल सवालों के,
किए वो हल नहीं भूले ।
भरोसे की रिवायत में,
मिले कुछ छल नहीं भूले ।

फागुन फिर आकर चला गया

– डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन',
प्रयागराज, उ.प्र.

प्रियतम के प्रेमिल प्राँगण में,
निशि वासर मन को छला गया ।
बहुविधि वसंत के आँगन में,
फागुन फिर आकर चला गया ।।

तंद्रिल तुषार के जाते ही,
ऋतुराज रंग लेकर आया ।
पीली सरसों की क्यारी में,
मन का मयूर नित इतराया ।।
इस रंग भरी फगुनाहट में,
मौसम महका कर चला गया ।
बहुविधि वसंत के आँगन में,
फागुन फिर आकर चला गया ।।

कोमल कलियाँ कुंजित गलियाँ,
मधुवन मनमोहक मनभाया ।
नित राग-रागिनी गा-गा कर,
चातक चकोर मन बहलाया ।।
संदल समीर सकुचाया-सा,
नैनन आँसू छलछला गया ।
बहुविधि वसंत के आँगन में,
फागुन फिर आकर चला गया ।।

शुष्क हृदय बोझिल पलकें अरु,
मन का आँगन नित सूना है ।
शोर मचाया सन्नाटे ने,
दर्द दिलों का अब दूना है ।।
विकिरण रवि का अब नित्य दिवस,
मन के अंतस को जला गया ।
बहुविधि वसंत के आँगन में,
फागुन फिर आकर चला गया ।।

कलियाँ चटकीं भौंरे डोले,
फूलों का भाग्य पुनः जागा ।
मधुपान मधुप करते हैं नित,
मंडप मुँडेर बोले कागा ।।
मन की बगिया नित सूनी है,
जब से प्रियतम दिल जला गया ।
बहुविधि वसंत के आँगन में,
फागुन फिर आकर चला गया ।।

संवेदन सब शुष्क हुए हैं,
मन का कोना नित मुरझाया ।
तिमिरांचल की चंचलता में,
जीवन को निशिदिन सुलझाया ।।
यादों के गलियारे से अब,
मधुमास मधुर मन चला गया ।
बहुविधि वसंत के आँगन में,
फागुन फिर आकर चला गया ।।

खुशियों का रास्ता है माँ

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

धूप में छाँव बनके रहती है ।
सबके ख़्वाबों का घोंसला है माँ ।।
आफ़तों से वो लड़ती रहती है ।
घर की हिम्मत है हौसला है माँ ।।
माँ ही काशी है माँ ही काबा भी ।
एक साक्षात देवता है माँ ।।
बदनज़र से सदा बचाती हैं ।
हो बला दूर वो सदा है माँ ।।
अपने हर दर्द की दवा है माँ ।
साथ चलती हुई दुआ है माँ ।।
ज़िंदगी के उदास लम्हों में ।
जीने का एक फ़लसफ़ा है माँ ।।
कुछ ठिकाना न कुछ पता अपना ।
अपना स्थायी मगर पता है माँ ।।
वो ख़फ़ा होने पे बस रोती है ।
कोई करती नहीं गिला है माँ ।।
दिल के हर दर्द को समझती है ।
धड़कनों में बसी सदा है माँ ।।
दिखती भगवान की स्वयं मूरत ।
पूजा है और वंदना है माँ ।।
दर-बदर हो गए यहाँ जब भी ।
बेसहारों का आसरा है माँ ।।
माँ के रहने से घर महकता है ।
घर में फूलों का सिलसिला है माँ ।।
दें के अपना निवाला बच्चों को ।
भूखी सोती रहीं सदा है माँ ।।
प्रेम, वात्सल्य, लाड़, ममता का ।
दूसरा नाम ही रखा है माँ ।।
प्रेम, अपनत्व से भरा रहता ।
एक प्राचीन ओटला है माँ ।।
पास है माँ नलिन तो सब कुछ है ।
सारी दुनिया की संपदा है माँ ।।
वो सफ़र में भी साथ रहती है ।
हर घड़ी हर पहर दुआ है माँ ।।
सारी दुनिया है झूठ की गठरी ।
सच का अनमोल पोटला है माँ ।।
ज़िंदगी गमज़दा हुई जब भी ।
एक ख़ुशियों का रास्ता है माँ ।।
माँ को खोकर नलिन लगा ऐसा ।
पास तनिक भी नहीं बचा है माँ ।।

ग्रीष्म से वर्षा (सॉनेट)

– श्री. अनिमा दास, कटक, ओड़िशा

हुआ आरंभ बूँदों का टिप-टुप,
अंबर है मुस्काता, धरती है चुप ।
वर्षा, तुम भर दो शुष्क सरिता,
ग्रीष्म, लिखो तपन की कविता ।
यहाँ सब है रुद्ध, सब निष्प्राण,
तीव्र रश्मियाँ, तीक्ष्ण अग्निबाण ।
वर्षा, तुम दे दो मुझे जल-भाग,
अब असह्य है यह रुद्र निदाघ ।
हुआ आरंभ बूँदों का वार्तालाप,
अंबर सुनता उर्वि-कथा अमाप ।
करे मोहित खग-कुल का कलरव,
झर-झर जाए निर्झरणी नीरव ।
जाओ ग्रीष्म, रचो पूर्ण विभास,
प्रतीक्षारत वर्षा का नव इतिहास ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can’t do more than one level at the same time, in the same way you can’t able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books :

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

गणनाद नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

सीरकाली तिरुज्ञान संबंध का जन्मस्थान था वह महान
जन्म लिए थे वही जहाँ
तिरुत्तोनियप्पर बने रहते महादेव
गणनाद नायनार का भी जन्म वहीं हुआ सीरकाली क्षेत्र में
जन्म से ही बने रहे कार्य किए
मरयावर कुल नेता के रूप में
भक्ति भगवान की शक्ति है सबको यूँ नहीं मिलती
भक्ति पुण्य कर्मों की देन है सबको यूँ नहीं मिलती
जन्म से भक्ति जो अपनाते हैं धन्य है पुण्य आत्मा है
भक्ति को अपना जीवन–लक्ष्य बनाने वाले ईश के मित्र है ।

सांसारिक सुख सारे क्षणभंगुर ठहरते हैं सदा नहीं रहते
सांसारिक से परे आध्यात्मिक प्यार जो पनपता है
कच्चा कभी नहीं बहुत अधिक मजबूर बना रहता है
एक बार महादेव को जो सब कुछ मान लेते हैं
एक जन्म में नहीं जन्म–जन्मों में उनके भक्त ठहरते हैं
भक्ति वह शक्ति है जो बाकी सब को छुड़ा देती है
भक्ति वही युक्ति है जो मोक्ष का द्वारा बनती है
भक्ति वह हृदय की ज्योति है जो सदा चमकती रहती है ।

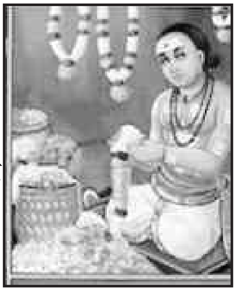

सच्चा शिव भक्त सब कुछ त्याग सकता है
शिव की आराधना को कभी नहीं छोड़ सकता है
शिव शिव हर हर सदा कहकर वह जीने लगता है
शिव भक्तों में शिव को वह हमेशा ढूँढने लगता है
भक्त की सेवा उसी को वक्त भगवान की सेवा मानता है
भक्त से प्रीति बढाकर वह परमेश्वर से प्रति बढाता है
शिव भक्त की सेवा उसे शिव तक पहुँचाती है
शिव महादेव की महाकृपा से शिवचरण मिल जाता है ।

गणनाद नायनार करते रहे शिव उसी की सेवा
मंदिर की करते रहे साफ सफाई हर रोज हर तरह
पौधे बहुत उगाते थे फूल पाने चढ़ाने महादेव पर
हर भाग को साफ़-सुथरा रखते थे सफाई कर करके
ताकते नहीं काम करते रहते दिल भर के
अभिषेक अलंकार भी करते रहे मन में पंचाक्षरी भजते
शिव भक्तों की सेवा उनकी आराधना भी करते
शिव भजन में पूरी जिंदगी उसे लगाते स्वयं सुख भरते ।

तिरु ज्ञान संबंध की सेवा दिल भर कर यह किया करते
शिवचरण जैसे पड़े रहते वैसे इनका भी वे पकड़े फिरते
भक्ति मार्ग बहुत ही सरल है भक्त उसके लिए
उसे वक्त की जीत जरूर है जिसने एक गुरु पा लिया
शिव भक्त को खुश कर दो शिव महान खुश हो जाएँगे
शिव भक्त के आशीष से शिव की प्राप्ति कर पाएँगे
शिव को ध्यान में भरो सब शिवमय लगेगा
शिव की करती शिव की आराधना सब फल प्रदायिका ।

संग रहकर तिरु ज्ञान संबंध महान के सीख गए
सरल रूप से शिवपद पाने का मार्ग जान लिए
चित्त को शिव में रखकर शिव बनने का प्रयास कर
जगत को शिव अपनाने का मार्ग वह बताकर अमर हुए
शिव महान की हुई प्राप्ति सुबह में जाकर मिल गए
शिवा शिवा भजकर सेवा कर कर शिव में ये मिल गए
गणनाद नायनार मिल गए शिव पद पाकर शिव में
नेता ठहरे नेक भी रहे दूसरों को शिव पाने का मार्ग सिखाए ।

शिव चरण मार्ग सिखाए, गणनाद नायनार ।
शिव सेवा समन से कर, शिव पद पाए सुखद ।।

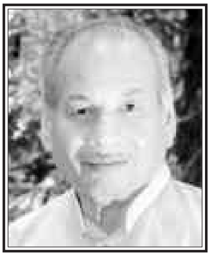

ज़िंदगी एक किताब की तरह है

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि
शंकर मिश्र 'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

जिंदगी एक किताब की तरह है,
कुछ पन्ने बेरुखे हैं, कुछ खुश हैं,
और कुछ पन्ने रोमांचक भी हैं,
लेकिन अगर हम पेज नहीं पलटेंगे
तो हमें कैसे पता चल पायेगा कि
अगले पन्ने में हमारे लिए क्या है ।

ईश्वर की कृपा यह नहीं है कि
जीवन में कभी दुःख ही न आए,
दुःख में भी हम दुखी न हों और
वो घड़ी कब आकर चली जाए,
हमें यह पता ही नहीं चल पाये,
ईश्वर की कृपा जब मिल जाये ।

रिश्ता कभी भी हमारी तहज़ीब,
हमारी सुंदरता, आयु या हमारे
व्यक्तित्व पर निर्भर नही करता है,
रिश्ता हमारी सच्चाई, ईमानदारी,
हमारे द्वारा दिये गये समय व हमारे
द्वारा दिए सम्मान पर निर्भर करता है ।

जीवन मे दो व्यक्ति जीवन
को नई दिशायें दे जाते हैं,
एक वो जो मौका देते हैं व
दूसरे वो जो धोखा देते हैं ।
एक दिशा सकारात्मक होती है,
तो दूसरी नकारात्मक होती है ।

अपनों पर उतना विश्वास रखना
जितना दवाओं पर हम रखते हैं,
अपने बेशक थोड़े कड़वे होते हैं,
पर दवा जैसे फ़ायदेवाले होते हैं ।
मानव काया जिसने पाया
प्राणियों में श्रेष्ठ होता है,
फिर भी जीवन क्षणभंगुर,
मृत्युभय सदा ही होता है ।

प्रभु की माया में रमना,
उसको क्या समझना है,
वही एक सत्य होता है,
उसके दर्शन अति दुर्लभ हैं ।
नश्वर काया में अग्नि, हवा,
सब कीचड़ पानी माटी हैं,
आदित्य देखा है सारी दुनिया,
यह सब धोखे की ही टट्टी है ।

भेदभाव दूर हटाओ, भारतीय बनकर जिओ । मातृभूमि हमारी है यह मान सम्मान करो ।

फिसलना नहीं है

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

आपको फिसलना नही है
आकर उस सीढ़ी से,
जिसके बाद मंजिल आनी है
अब लंगडा कर चलने का समय नहीं
मंजिल में पहुँचेगा वही
जिसमें पागलों–सी होगी रवानी है
मत देख दायाँ–बायाँ
समस्या तो सबके जीवन में खड़ी है
हारा तो वही है
जो कष्ट को मान लिया इससे बड़ी है
इसलिए बना हौसला
रख अटूट साहस
निकल पड़ अकेले संघर्ष को
जब तक अंतिम श्वास बाकी है
मिलेगा मंजिल
खुद के दम में
जिनके आत्मविश्वास में साकी है ।।
मत लड़खड़ा संभाल कदमों को
यही बेला कुछ करने की
नाम रोशन, दशा सुधारने और
बेहतरीन जीवन संवारने की ।।

धरा को बचाओ

– श्री. तरुण कुमार दाधीच,
उदयपुर, राजस्थान

धरा का ध्यान हमने नहीं रखा तो
सब धरा का धरा ही रह जाएगा
यूँ ही देखते रह जाएँगे हम सब
फिर हाथ में कुछ भी नहीं आएगा

यही अगर सब चलता रहा तो
शुद्ध प्राण वायु कहाँ से पाएँगे
वृक्ष इसी तरह कटते ही रहे तो
फिर हरियाली कहाँ से पाएँगे

देखो जल प्रदूषित मिल रहा है
हम बुरे परिणाम भुगत रहे हैं
इस पर भी धरा को बचाने का
कोई ठोस प्रयत्न नहीं कर रहे हैं

पानी की बरबादी से हो रही है
संकट में हैं जगत के भाई–भाई
चारों तरफ पर्यावरण दूषित है
लो हर तरफ मची है त्राहि त्राहि

ओजोन परत का छेद बढ़ रहा
बोलो हम इससे पार कैसे पाएँगे
बिगड़ता रहा धरा पर प्रदूषण तो
प्यारी धरा को कैसे बचा पाएँगे ?

अस्तित्व और बदलाव

–श्री. महेन्द्र मद्धेशिया,
सिद्धार्थनगर, उ.प्र.

शहरों की धूल में बिखरते हैं
कुछ चेहरे
हर दिन बिखरते हैं
कई–कई वजहों से
रोज़गार से
महँगाई से
अपेक्षाओं से
और दबावों की आँधी से
मैं देखता हूँ
उन्हें टूटते हुए
फिर अपना ही बोझ उठाते–उठाते
थककर खामोश हो जाते हुए
यहाँ जीवन और संघर्ष
एक–दूसरे का पर्याय हैं
सब कुछ बदलता है
फिर भी जड़ें ज्यों की त्यों रहती हैं
अवसर की मिट्टी और
अन्याय का पानी
मिलकर एक अजीब–सी काई बनाते हैं
जिसमें फिसलना बेहद आसान है
फिर भी उम्मीद कभी हारती नहीं
समय से देर–सबेर
हर टूटा व्यक्ति
अपना नया रूप रच ही लेता है
यही शुरुआत है
और यही अंत भी
एक निरंतर बदलते अस्तित्व का ।

हम कुछ ना कहेंगे

– डॉ. अलका अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

तुम भी ना समझोगे व्यथा,
जो मेरे दिल में है ।
किससे कहें अपनी कथा,
कोई भी है नहीं ।
कुछ लाभ भी दिखता नहीं,
कहने से किसी को ।
उपहास ही करते हैं यहाँ,
दूसरों का सब ।
बाती जले कितना भी,
शिकायत नहीं करती ।
जलती हुई शमा भी,
कभी उफ नहीं करती ।
जो कुछ भी है दिल में,
उसे चुपचाप सहेंगे ।
आँखों में हो आँसू मगर,
हम कुछ ना कहेंगे ।

लिख तो सकता हूँ

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी, पमगढ़, छत्तीसगढ़

जानता हूँ तुम्हें गिला है
कि मैं तुम्हारे बारे में क्यों नहीं लिखता,
तुम्हारा चाहनेवाला क्यों नहीं दिखता ।

हाँ, लिख तो सकता हूँ–
तुम्हारे रूप, श्रृंगार और सौंदर्य पर,
भय, लोभ, लालच, मोह, दया और ऐश्वर्य पर,
मगर अब थक चुका हूँ
इन विषयों को दोहराने से ।

मोह अब भी पूरी तरह छूटा नहीं,
पर कुछ नया सीखने की चाह जागी है ।
इन सबके अलावा भी
लिखने को बहुत कुछ है ।

कब तक लिखता रहूँ
वही चमत्कार, पाखंड और झूठ ?
अब दिखते हैं मुझे
असली मुद्दे–
अशिक्षा, गरीबी, भूख और शोषण ।
लिखना है–
कौन कर रहा है इनका पोषण,
क्यों अब भी जिंदा है
हजारों साल पुराने, बेकार नियम,
जिनके नीचे दबकर
आज भी सिसक रहे हैं लाखों लोग ।

क्यों नहीं कर पा रहा आम नागरिक
अपने संवैधानिक अधिकारों का प्रयोग ?
हक़, अधिकार और कर्तव्य
सबको बताना है,
अंतिम पायदान के व्यक्ति को
ऊपर उठाना है ।

तुम नाराज़ मत होना, प्रिये,
तुम्हारी तारीफ़
रूबरू होकर कर दूँगा,
अभी मेरी कलम को
ज़रूरी मुद्दे लिखने दो ।

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

घनक्षरी

– श्री. वसंत,
जमशेदपुर, झारखंड

सेना के जवान जो भी,
काम आए देश–हित,
याद में न आँसू हम,
उनकी बहाएँगे ।
करेंगे नमन उस,
माटी को जरूर फिर,
माथे पे तिलक हम,
उसका लगाएँगे ।
घुस जाए जैसे धान
के खेतों में गजराज
शत्रु–दल में दौड़ के–
वैसे घुस जाएँगे ।
रण में न शीश वीर,
गिन कर हैं काटते,
रिपुओं के लिए हम,
काल बन जाएँगे ।

गीतिका

गाँव में

– श्री. अशोक
आनन, शाजापुर,
म.प्र.

बहुत अपनापन था गाँव में ।
साफ़ सबका मन था गाँव में ।
जिसकी शहतूती बोली में –
बहुत मीठापन था गाँव में ।
उम्र जिसकी छाँव में गुज़री –
वरद वो जामुन था गाँव में ।
छोटा–सा माटी का घर था –
बड़ा–सा आँगन था गाँव में ।
मस्ती सावन के झूलों की –
रंगीला फागुन था गाँव में ।
माटी की महक में अज़ब–सा
एक सौंधापन था गाँव में ।
स्वभाव में जिसके चुम्बकीय –
सहज़ आकर्षण था गाँव में ।

काम

– श्री. अनंग पाल सिंह भदौरिया
'अनंग', ग्वालियर, म.प्र.

आश्रय दैवी शक्ति का, कर सकता वह काम ।
जो शरीर की शक्ति से,कर न सके जन आम ।।
कर न सके जन आम, चेतना तंत्र जगाओ ।
इसमें शक्ति अपार, इसे क्रमशः विकसाओ ।।
कह 'अनंग' करजोरि, नहीं फिर रहता डर भय ।
मन की शक्ति अपार, लीजिए उसका आश्रय ।।

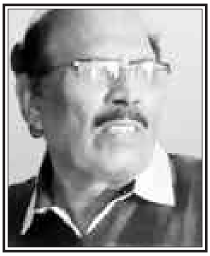

सुगर-फ्री युग

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

शुगर-फ्री युग में
मिठास की चाह बाकी है –
जीभ को डर है, मन को प्यास ।

सत्य-असत्य,
न्याय-अन्याय
परखनेवाली आँखों पर
मोतियाबिंद का मोटा पर्दा है –
धुंधला दिखता है युग का यथार्थ,
साफ दिखता है केवल स्वार्थ ।

इसीलिए
जब हृदय की व्यंजना को
शब्दों की शक्कर में लपेटकर
परसने का प्रयास करता हूँ,
तो वह मिठास भी
कड़वे होठों पर गिर पड़ती है
औंधे मुँह –
और घात खाता है कहनेवाला ही,

लगाओ

– डॉ सुषमा
सेंगर,
कानपुर, उ.प्र.

सूखी धरती कहे पुकार,
अब तो वृक्ष लगाओ चार ।
हमको अब तो धानी कर दो,
नही बनो धरती पर भार ।
जितना ऑक्सीजन लेते हो,
उतने ही तुम वृक्ष लगाओ ।
मेरे दिल मे आग लगी है,
छांव बढ़ाकर उसे बुझाओ ।
कंकरीट के जंगल का तुम,
अब ना और करो विस्तार ।
अब तो वृक्ष लगाओ चार ।
सड़कें तो बनवा दीं कितनी
पेड़ एक भी नहीं लगाया ।
बनवा दीं कितनी फैक्टरियाँ
उनका कचरा वहीं बहाया ।
आस-पास के बस्तीवाले,
इसीलिए होते बीमार ।
अब तो वृक्ष लगाओ चार ।
जितना मिला विरासत में है
उतना आगे आप बढ़ाओ ।
जितना दिया पिता ने तुमको
अपने बच्चों को दे जाओ ।
थोड़ा शिष्टाचार निभाओ
नहीं बढ़ाओ भ्रष्टाचार ।
अब तो वृक्ष लगाओ चार ।

धरती माँ

– श्री. रवीन्द्र कुमार राणा, बुलंदशहर, उ.प्र.

आओ बच्चो हम सब लें संकल्प,
धरती को स्वच्छ पावन बनायेंगे ।
धरती सेवा में कर जीवन समर्पित,
धरती को प्रदूषण मुक्त बनायेंगे ।।

धरती हमें फल फूल अन्न जल देती,
धरती माँ सेवा का फर्ज़ निभायेंगे ।
प्रकृति के बदलते रंग देखकर हम,
हरित प्रौद्योगिकी अवश्य अपनायेंगे ।।

आओ बच्चो मिलजुलकर हम सब,
सघन स्वच्छता अभियान चलायेंगे ।
धरती होगी स्वच्छ और स्वस्थ तब,
देशवासी समृद्धि यश कीर्ति पायेंगे ।।

बच्चो धरती हमें है प्राणों से प्यारी,
नदियों को निर्मल स्वच्छ बनायेंगे ।
जल स्रोतों किनारे पौधारोपण करके,
धरती माँ को पर्यावरण युक्त बनायेंगे ।।

वर्षा जल संरक्षित व पुनर्भरण करके,
भूजल संकट से धरा को बचायेंगे ।
धरती हमारी हर पीड़ा सहती रहती,
प्लास्टिक कदापि नहीं अपनायेंगे ।।

धरती मानवता का कल्याण करती,
धरती से कूड़ा अपशिष्ट हटायेंगे ।
धरती भेदभाव किसी से न करती,
बच्चो धरती को हम स्वर्ग बनायेंगे ।।

ग़ज़ल

– श्री. अनुराग ग़ैर, सहारनपुर, उ.प्र.

कोई पत्थर काम न आया,
इक भी मेरे बाम न आया ।

उस महफ़िल में क्यूँ कर जाना,
जिसमें मुझ तक जाम न आया ।

वक़्त का पंछी सोच रहा है,
क्यूँ कर अब तक दाम न आया ।

खाक मिलेगी उसको जन्नत,
जिसके लब राम न आया ।

सूनी गलियाँ राह निहारें,
आज मुसाफ़िर शाम न आया ।

ग़ैर उदू को उसने सदा दी,
लब पर मेरा नाम न आया ।

अनकही बातें

– श्री. पूरवी तालुकदार,
बेंगलुरु, कर्नाटक

कितनी बातें होती हैं कहने की,
लेकिन कहाँ हम हर बात कह पाते,
कुछ बातें बिना कहे
दिल के कोने में छिप जातीं ।
समय गुज़र जाता,
हर दिन कुछ नया होता,
पता नहीं चलता
उन छिपी हुई बातों के बारे में,
साँसों के साथ वे भी चलती रहतीं ।
भूलकर भी भूल नहीं पाती,
याद आ ही जाती है,
वीरानी में बैठती हूँ तो
वे अनकही बातें
उभरने लगती हैं ।
इस कदर यादों के पन्ने पलटते,
निगाहें थम जाती हैं,
आँसू नहीं बहते पर
इनकी टिमटिमाती बूँदें
होंठों पर ठहरकर
हल्की–सी मुस्कान बन जाती हैं ।

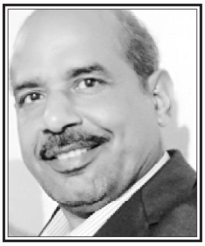

भोले में है विश्वास

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

धरा पर कोई भी हमको,
भोले–सा भोला नहीं लगे,
भरा है प्यार का इक झोला,
हमें ये खाली नहीं लगे ।
धरा पर कोई...
कोई इच्छा लेकर आए,
भोले के इस आंगन में,
उसे तो मालूम है इतना,
भोले आएँगे सावन में ।
धरा पर कोई...
मन के किसी भी कोने में,
भक्ति के सुर तुम गढ़ लेना,
भोले जब भी आएँ यहाँ,
तुम सुर में बस गा देना ।
धरा पर कोई...
भोले से बांधोगे आस,
नहीं कभी होंगे निराश,
शब्द भोले में है विश्वास,
धरा स्वर्ग–सी होगी आज ।
धरा पर कोई...
आओ भोले–सा भोलापन,
किसी के बचपन में ढूँढ़े हम,
पास आ जाएँ जब भोले,
मन भर कर मुस्का लें हम ।
धरा पर कोई...

लुप्त हो गई ग्रामीण नजारा

– श्री. उदय किशोर साह, बाँका, बिहार

लुप्त हो गई अब ग्रामीण नजारा
ईष्या द्वेष की बिक रही है गुब्बारा
खेत खलिहान मकई खेत की मचान
हो गये सब के अब सब ही गुमनाम

स्वर्ग में रामू काका देख हुए हैरान
गाँव में बस गये । असुर व शैतान
दिल काला मन में तरासे बेईमान
उजड़ गये बगिया के वृद्ध बागवान

घुंघट में नारी लगती थी जहाँ संस्कारी
माँ बहनों की सबसे रिश्ता थी हमारी
शर्म हया की श्रृंगार था बड़ी ही भारी
बड़े बुजुर्ग थे घर में थाना प्रभारी

बैलों की गले की घंटी की । टुन टुन
गौरी की पायल की बजती वो रून झून
कान तरस गये सुनने को बरसों मन
फैशन की चलन बन गई हमारी दुश्मन

कहाँ गये वो पीपल । तले की चौपाल
शाम को बजते ढोलक झांझर वो झाल
सूर संगीत व अभिनय की कमाल
निर्गुण गीत सुन हो जाते थे बेहाल

फीकी हो गई फागुन की होली की रंग
दशहरे की मेला की हो गई ढंग बेढंग
वृद्धजनों को मिल रही है अब गाली
गाँव जवार की गलियाँ हुई काली

तपना

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
सीकर, राजस्थान

जीवन में इतना कुछ पाया
पर केवल कमियाँ गिन पाया,
जोड़, गुणा और भाग में फंस कर
जो पाया वो भी झुठलाया ।

देख–देख औरों की प्रगति,
मन में ईर्ष्या भाव ही आया,
आगे बढ़ने की चाहत थी,
उद्यम उतना कर ना पाया ।

सफल हुआ जो, उसको देखा
पर उसका संघर्ष ना भाया,
अपने झूठे अहंकार में,
सच्ची मेहनत को बिसराया ।

यदि जीवन में बढ़ना है तो,
खुद को जुट कर तपना पड़ता,
बच्चा भी गिर–गिर कर ही,
डगमग कर आगे है बढ़ता ।।

गीत

– श्री. सरिता 'कोहिनूर',
बालाघाट, म.प्र.

साथ हमारे चलते चलते,
हमसे जो दूर हो गए हैं ।
अश्कों का दामन थाम के हम भी,
पत्थर से कोहिनूर हो गए हैं ।।

दुनिया ने हमको जी भर के तोड़ा,
कहीं थी राहें कहीं था रोड़ा ।
जी भर के जीते थे जी भर के मरते ।
दुनिया थी जालिम कहीं का न छोडा ।
अपनों का हमको सहारा मिला तो,
मन से ही सिंदूर हो गए हैं ।

अश्कों का दामन थाम के हम भी,
पत्थर से कोहिनूर हो गए हैं ।।

कोई था अपना कोई पराया ।
हमसे ही भागा हमारा ही साया ।
तुम्हारी ही यादों के हम थे दिवाने ।
तुम्हारे सिवा मन किसी को न माने ।
खोकर के तुमको हमने ये जाना,
रिवाजों से मजबूर हो गए हैं ।।

अश्कों का दामन थाम के हम भी,
पत्थर से कोहिनूर हो गए हैं ।।

ये जीवन सरलता से चलता नहीं है
जो चाहें वो मन से भी मिलता नहीं है ।
मन में ही खुशियाँ हैं मन में ही गम है ।
सुखों के जो बादल हजारों भी कम है ।
जो बचपन से अब तक खुद को निभाते,
कहीं रिश्ते दस्तूर हो गए हैं ।।

अश्कों का दामन थाम के हम भी,
पत्थर से कोहिनूर हो गए हैं ।।

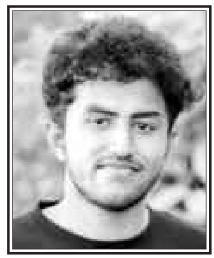

एक कदम

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

एक कदम हाँ एक कदम
बस आगे रखो तुम
सारी बुराई को दूर फेंककर
आगे निकलो तुम ।

तेरी प्रतिभा पर कर भरोसा
अवसर मिल जायेंगे अनेक
उन अवसरों को छीन लो
जिन्दगी बन जायेगी रंगीन ।

प्रयत्न तो करके देख लो
मिलें जीत या हो हार
प्रयत्न तो करके देखो
सामर्थ्य से कर लो पार ।

समय बदलेगा मेरे यार
जीत की हवा बहेगी तब
कमजोर मत बनो तुम
सफलता सहित तुम झूम ।

मैं इस लिपि को

– श्री. शुभदा पांडेय,
आगरा, उ.प्र.

मैं पढ़ना चाहती हूँ ।
इस लिपि को
जो शीर्ष तक सूखी होकर भी
नहीं खोई है अपना विश्वास
उसके पोर– पोर को पता है
फिर बसंत आएगा,
हवा बदलेगी
और हरियाली का हीमोग्लोबिन
फिर दौड़ेगा
उसकी शिराओं में ।
मैं पढ़ना चाहती हूँ
इस लिपि को
जो मालवा की विरासत में
शामिल है ।
जो अपत्र होकर अकिंचन नहीं
उसे आस्था है नर्मदा के जल पर
जो सींचेगी सदैव
विकट परिस्थितियों में
मैं पढ़ना चाहती हूँ ...
इस लिपि को जो दधीचि के दर्शन पर
अपने अस्थि– पंजरों से
पक्षियों को उड़ने का मुकाम देकर
उनकी ऊँचाइयों से खुश होना चाहती हैं ।
विंध्य की हवाएँ
जिसे सिखा रही हैं त्याग
निमाड़ी जिसने साधा हुआ है –
बिछुए से बिंदी तक
जो छाँव न देकर भी
प्रस्ताव देती है प्रसन्नता का
मैं उस लिपि को पढ़ना चाहती हूँ ।

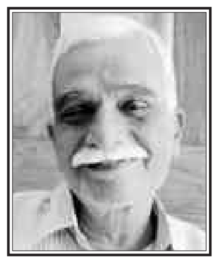

कौन सुनेगा ?

– श्री. पुष्करराय जोषी, राजकोट,
गुजरात

कभी कभी मुझे लगता है
मैं मानवी से एक मशीन बन गया हूँ ।
मैं अपनी पहचान खो बैठा हूँ,
चारों ओर भीड़ में
मैं कहाँ हूँ ?
घूमते पहियों के साथ
मैं भी घूमता हूँ,
समय को भी मैं भूल गया हूँ
घड़ी की भांति,
पहियों के साथ मैं
कहाँ जा रहा हूँ ?
'मै तो चला, जिधर चले रास्ता'
पहियों के नीचे कुचलती
मेरी चीख कौन सुनेगा ?

सुन

– श्री. भगवती प्रसाद निदारिया,
दिल्ली

जितना तम
उतनी ही रोशनी
करते हम

झंडे ही झंडे
सेवा के नाम पर
हैं हथकंडे

धूल न फाँको
भटकना छोड़के
मन में झाँको

बैठा इंसान
बारूदी ढेर पर
तीली को थाम

अनवरत
चींटियों का काफिला
है कार्यरत

महाभारत
होगा कुरुक्षेत्र में
सब गारत

मौत का खेल
हरियाली से खेले
अमरबेल

सोचे हरेक
पहला न्यायालय
स्वयं विवेक

सच रो रहा
पैर फैला चैन से
झूठ सो रहा

सत्ता को गाएँ
गलियारों में गधे
पंजीरी खाएँ

एक–एक दो
एक–एक ग्यारह
आस मत खो

कर संकल्प
खुद ही उभरेगा
कोई विकल्प

एक तिनका
सागर में डूबते
लोग ढूँढता

किरण थाम
चीर दो अंधकार
डरेंगे वाम

पाठकों के पत्र ...

आदरणीय संपादक महोदय,

हिन्दी पत्रिका शबरी के माध्यम से हर माह विभिन्न लेख कविताओं से ज्ञानवर्धन के साथ ही हिन्दी परिवार सम्मेलन करा कर आपने हिन्दी के प्रति नई स्फूर्ति पैदा की, अत्यंत सराहनीय है ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज, लखनऊ, उ.प्र.

आदरणीय सम्पादक महोदय

शबरी का अप्रैल अंक पढ़ा । पढ़कर आत्मविभोर हो उठा । सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक थी । कई रचनाओं को तो कई बार पढ़ा ।

– श्री. राम कृष्ण रस्तोगी, गुरुग्राम, हरियाणा

तिरुवल्लूर जी की विरह पर रचना, मुरब्बा मुस्तफा, सूरदास और कृष्ण भक्ति रचनाएँ बहुत अच्छी लगी ।

– श्री. प्रदीप कोरी, इंदौर, म.प्र.

Dear Magazine Committee (Shabari Siksha Sansthan),

We are extremely grateful for the opportunity given to our students to showcase their creative writing in your esteemed publication.

Thank you for providing them with such valuable exposure. We look forward to many more such collaborations further. Warm regards.

- New Stewart School Fraternity,
Cuttack, Odisha

नवांकुर

सौंदर्य

– अद्विका राऊत,
चौथी कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल,
कटक, ओड़िशा

प्रकृति की सुंदरता है कितनी अनमोल,
सुंदरता है जैसे मीठे गीतों के बोल ।

बारिश की चमकती बूँदों से–
अपनी दशा वह दर्शाती है,
पेड़–पौधों की छाँव देकर
अपना कर्तव्य निभाती है ।

दूब सी कोमल तन,
रुई सा कोमल मन,
पशु–पक्षियों को आश्रय देती,
अपनी मुलायम सेज पर सुलाती ।

माँ–सा प्रेम जताती,
पूरे विश्व को दिल में समाती,
कण–कण में वह बसती है,
देकर हमें साँस, उपकार है करती ।

पृथ्वी है हृदय,
पेड़–पौधे इसके ताज़,
प्रकृति ही बादल, है वृष्टि,
है यह अनमोल साज़ ।

पेड़

– आराध्या राज,
चौथी कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल,
कटक, ओड़िशा

छोटा पौधा ही पेड़ बन जाता,
सबसे अपना नाता है कहलाता ।
देता फल–फूल हमें भरपूर,
चारों ओर हरियाली है फैलाता ।
खाने को अनाज है देता,
बदले में कुछ भी न लेता ।
जीवन अगर बचाना है,
सबको एक–एक पेड़ लगाना है ।

हमारी प्यारी बगिया

– ईमानुएल बेहेरा,
चौथी कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल,
कटक, ओड़िशा

प्यारी–प्यारी प्रकृति हमारी,
लगती है सबसे न्यारी ।
इसकी गोद में भरा है प्यार,
जंगल और नदियों का संसार ।
पहाड़ों की ऊँची–ऊँचाई,
सागर की गहरी गहराई ।
खेतों की सुंदर हरियाली,
आसमान की छतरी नीली ।
रिमझिम–रिमझिम बरसे पानी,
है हमारी धरती सुहानी ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
इस बगिया को स्वर्ग बनाएँ ।
सदा खिलती रहे प्रकृति हमारी,
यह है सुंदर, सबसे न्यारी ।

अनमोल देन

– हमसिका कुमारी,
चौथी कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल,
कटक, ओड़िशा

सूरज की चमक से होती दिन की शुरुआत,
चाँदनी की चमक से... सुंदर लगती रात ।
फूलों की खुशबू, पवन की सुवास,
बारिश की बूँदें, बुझाए धरती की प्यास
झरनों की धारा, पर्वत की ऊँचाई,
झील की शांति, पानी की गहराई ।
पक्षियों के गीतों से झूमे जग सारा,
प्रकृति का आँचल है सबसे प्यारा ।
जीवन का आधार, ईश्वर का उपहार,
प्रकृति की देन से महके संसार ।

प्रकृति

– अमृता राज,
छठी कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल,
कटक, ओड़िशा

इतनी सुंदर मनमोहक जो,
प्रकृति हमारी है ।
इसका संरक्षण करना भी,
हमारी जिम्मेदारी है ।
इसके गर्भ में सागर बहता,
हिमालय है इसका तन ।
ऑक्सीजन यह देती हमको,
बचाने हमारा जीवन ।
हमें इसे अपनाना है,
मिलकर इसे बचाना है ।
अंत होती इस प्रकृति को,
उसका जीवन लौटाना है ।

स्कूटी

– लक्षिता श्रीधर,
बारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली
पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

इस हफ़्ते में मेरे पिताजी ने मुझे स्कूटी चलाना सिखाया था । यह बहुत अलग-सा अनुभव था । जिसका अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था । इतनी सारी भावनाओं को एक साथ अनुभव करना बहुत विचित्र लगा था । जैसे की खुशी, डर, परेशानी, विश्वास, शांति, उल्लास बहुत सारी भावनाएँ एक साथ, मैं कुछ समझ नहीं पाई । फिर जब स्कूटी चलाने लगी तो मेरा विश्वास बढ़ने लगा । मुझे कई दिन स्कूटी चलाने और स्टैंड लगाने तक बहुत डर था । उसके बाद जब मेरे पापा ने मुझे स्टैंड लगाने का चाल सिखाया और मैंने स्टैंड लगा ही दिया । उस समय मेरी खुशी की कोई सीमा ही नहीं थी । मैं खुशी से चिल्ला उठी । आज तक जो भी सीखी हूँ उसमें यह अनुभव बहुत अलग है ।

नवांकुर-रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें ।

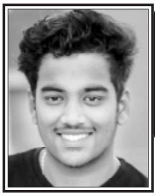

बिना मेहनत के सपने

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै, तमिलनाडु

सब देखते हैं सपने बडे–बडे
सब उम्मीद रखते हैं ऊँची
पर कदम कोई नहीं बढाता
बस आसमान को देखते रह जाते ।

बातें बडी–बडी करते हैं
मेहनत से दूर भागते हैं
सपने तो आसान लगते हैं
मेहनत कभी आसान नहीं ।

बिना मेहतन के मान लो
सपने साकार नहीं होते
सोचते रहे तो सोचते रहते
हिम्मत रखनेवाले हिमालय चढते ।

प्रतिबिंब

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस
कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक शहर में एक संग्रहालय था, जो पूरी तरह दर्पणों से बना हुआ था । एक रात संग्रहालय को बंद करते समय पीछेवाले दरवाजे को ताला लगाना भूल गए थे । एक कुत्ता उस बिल्डिंग में फस गया था । कुत्ते को इस बात का नहीं पता कि, उसके चारों तरफ दर्पण थे । हर तरफ बहुत कुत्ते हैं । ऐसे देखकर वह सारी ओर भौंकना शुरू कर दिया । जब वह कुत्ता अपनी प्रतिबिंब को देखकर भौंकना शुरू किया, सारे कुत्ते उसे देखकर भौंकना रहे थे । रात भर वह कुत्ता भौंकना नहीं रोका था । अगला दिन सुबह जब वह बिल्डिंग की सिक्योरिटी ने संग्रहालय खोला और वह मरे हुए कुत्ते को देखकर घबरा गया था । इससे हम एक बात समझना चाहिए कि उस रात उस कुत्ते को परेशान करने के लिए वहाँ कोई नहीं था । वह खुद की प्रतिबिंबों से लड़कर मर गया था । इससे हम एक बात समझना चाहिए कि, इस दुनिया भी एक बड़ा दर्पण जैसा है । हमारे साथ अच्छा या बुरा जो कुछ हो रहा है वह सब हमारे सोच और काम का प्रतिबिंब है ।

देववाणी संस्कृत

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

आत्मबलिदानी महात्मा

विजयदशमीदिने मेवाड़राजकुमार:राणाप्रतापः तस्य अनुजः शक्तिसिंहः च स्वसैनिकैः सह मृगयायां प्रस्थिताः ।

तौ भ्रातरौ मिलित्वा मृगयायां आस्ताम् । यदृच्छया उभयोर् दृष्टिः एकस्मिन् एव मृगस्य उपरि पतितवन्तौ । परस्मिन् क्षणेएव तौ तत् लक्ष्यं कृत्वाबाणाभ्यांतं विद्धवन्तौ । बाणेन आहतः मृगः भूमौ पतित्वा मृतः । कस्य बाणेन मृगः हतः इति प्रश्नः उत्पन्नः । राणाप्रतापसिंहः स्वस्य बाणेन एव मृगः मारितः इति अवदत्, तस्य अनुजः शक्तिसिंहस्तुस्वयमेव मृगं मारितवानस्मीति दावम् अकरोत् ।

यत् वाचिकविवादरूपेण आरब्धं तत् एतावत् वर्धितं यत् तौ स्वकीयान् म्यानात् स्वखड्गान् आकृष्य खड्गयुद्धे प्रवृत्तौ ।

युद्धं कुर्वन्तौद्वयौभ्रातरौदूरतःदृष्ट्वा राजगुरुः ''निवर्तयतु, मा युद्धं कुरु'' इति उच्चैः उद्घोषयन् धावित्वा आगतः । सः स्वभ्रातृणां समीपं गत्वा तान् शान्तयितुं प्रयत्नं कृतवान् यत्, ''हे बालकौ, अस्माकं देशःकस्मिन् भयानकपरिस्थितौ अस्ति ! अन्यधर्मजनानाम् आक्रमणात्अस्माकं जनाः प्रतिदिनं कथं दुःखं प्राप्नुवन्ति ! एतादृशे कठिने समये मेवाड़–राष्ट्रस्य मुख्यस्तम्भद्वयौ भवतौ परस्परं युद्धं कर्तुं, मर्तुम् अपि साहसं कृतवन्तौ ! एवमुक्त्वा तौ शान्तं कर्तुं प्रयत्नं कृतवान् ।

राजगुरुः राणाप्रतापं अवदत् ''शक्तिसिंहः केवलं बालकः एव । सः मृगं मारितवान् इति स्वीकरोतु'' इति । तदा शक्तिसिंहं प्रतिच अवदत् ''यत् सः एव अग्रजस्य सम्मानार्थं राणाप्रताप: एवमृगं मारितवान् इतिवदतु'' परन्तु तौ द्वौ अपि मनः परिवर्तयितुं तत्परौ न आस्ताम् ।

राजगुरुः परस्परं कलहंकृत्वाम्रियतौ तौराजपुत्रद्वयौ द्रष्टुं न इच्छति । तत्क्षणमेव स: खड्गं निष्कासितवान् । आकृष्टेन खड्गेन सः भ्रातृद्वयस्य मध्ये स्थित्वा अवदत् – ''भ्रातरः अद्य भवतः कलहस्य कारणं यः क्रोधस्य राक्षसः अस्ति सः मनुष्यस्य रक्तं न पिबन् स्वस्य तृष्णां शान्तयितुं न शक्नोति इति भाति । अत: स:मम रक्तं पिबतु । अहं मेवारस्य मृत्तिकां खादित्वावर्धितः । एतत् मम शरीरं मेवार् भूमितः मृत्तिकातः निर्मितम् । अतः पारिवारिकविवादैः मेवार् भूमे:विनाशं मम दृष्टेः पुरतः पश्यतुं न शक्नोमि ।'' एवं वदन् राजगुरुः खड्गेनस्वीयम्उदरं बलात्बिद्धवान् ।

तौ भ्रातरौ किं कर्तव्यमिति न ज्ञात्वा स्तब्धौ स्थितौ । तयोः मध्ये राजगुरो: रक्तस्नातं शरीरं भूमौ शयितम् आसीत् । राजकुमारौ लज्जया लम्बमानशिरसा आस्ताम् ।

தமிழமுது - நைவினை நணுகேல்

- எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனிதனின் வாழ்க்கையில் உயர்வும் தாழ்வும் அவன் செய்கின்ற செயலை பொறுத்து அமைகிறது. ஒவ்வொரு செயலும் அதன் நோக்கத்திற்கேற்றவாறு பலனை தருகிறது. செயல்கள் தருகின்ற பயன் மனிதன் மட்டுமல்லாது சில நேரங்களில் சமூகமும் ஏன் நாடே அனுபவிக்க வேண்டி இருக்கிறது. எனவே தான் ஒவ்வொரு செயலையும் செய்ய முற்படுவதற்கு முன் நன்றாக ஆராய்ந்து அதனால் ஏற்படக்கூடிய நன்மை தீமைகளை அறிந்ததற்கு பிறகு அச்செயலை செய்ய வேண்டும் என்று நம் முன்னோர்கள் கூறியிருந்திருக்கிறார்கள்.

செயல்கள் பல நேரங்களில் நன்மை தரக்கூடிய பலன்களை தருகின்றன. ஆனால் சில செயல்கள் தீமைகளை தந்து விடுகின்றன. நல்வினைகள் எப்போதுமே அனைவராலும் விரும்பக்கூடிய அனைவராலும் ஏற்றுக்கொள்ளக்கூடிய அனைவருக்கும் நன்மை தரக்கூடிய பலன்களை தருகின்றன.

தீவினைகள் ஒருபோதும் நல்ல பலன்களை தருவதில்லை. தீமை பயக்கக்கூடிய செயல்களை செய்வதால் கெடு பலன்கள் மட்டுமே நடைபெறுவது உண்டு. எனவேதான் ஔவையார் தீயன பயக்கும் செயல்களை இருந்து விலகி இருக்க வேண்டும் என்று எடுத்துரைக்கிறார்

தொடரும்...

ஒவ்வொரு செயலும் ஒவ்வொரு செயலும்
முழு மனதுடன் நாம் செய்வோம்
உனக்கா எனக்கா என்றிராமல் நமக்காக நாம் செய்வோம்
நீயும் நானும் மட்டும் வேண்டாம்
அனைவரும் மகிழ நாம் பணி செய்வோம்
வெற்றி நமதே என்று நாம் உயர்ந்திடுவோம்

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருவீழிமிழலை

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

நம்பினார்க்களுள் செய்யுமந்தணர்
நான்மறைக்கிட மாயவேள்வியுள்
செம்யொனோர்மட வாரணி
பெற்ற திருவீழிமிழலை
உம்பரார்தொழு தேத்த மாமலை
யாளொடும் முடனே உறைவிடம்
அம்பொன் வீழிகொண் டீர்அடி
யேற்கும் அருளுதிரே !

- ஸ்ரீ சுந்தரர் அருளிய 7-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

பூகைலாயம், கல்யாணபுரம், பஞ்சாக்ஷரபுரம், தக்ஷிணகாசி, ஷண்மங்கலஸ்தலம், ஸ்வேதவனம், ஆகாசநகரம், பனசாரண்யம், நேத்ரார்ப்பணபுரம், தேஜிநீவனம் முதலான பலப்பல திருநாமங்களால் சிறப்பிக்கப்படும் பெருமைக்கு உரிய திருத்தலம் திருவீழிமிழலை அருட்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

முன்பொரு சமயம் காத்யாயண மஹரிஷி அன்னை ஸ்ரீபார்வதி தேவியே தமக்கு மகளாகப் பிறக்க வேண்டும் என்று சிவபெருமானிடம் வேண்டினார். அதன்படி சிவனருளால் அன்னை ஸ்ரீ பார்வதி தேவியார் காத்யாயண மஹரிஷிக்குத் திருமகளாக காத்யாயிணி என்ற திருநாமத்துடன் திருஅவதாரம் செய்தார்.

காத்யாயிணிக்கு உரிய வயது வந்தவுடன் ஸ்ரீ சிவபெருமான் வந்து அவரை மணந்து மாப்பிள்ளை ஸ்வாமியாக திருக்காட்சிதரும். திவ்ய திருத்தலமே திருவீழிமிழலை ஆகும்.

சக்கரம் பெற்றது :

ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு சக்கரம் வேண்டி இத்தலம் வந்து ஸ்ரீ

சிவபெருமானை தினம் 1000 தாமரை மலர்களால் அர்ச்சித்து வந்தார்.

ஒருநாள் அர்ச்சனையின் போது சிவனின் திருவிளையாடலால் 1000ஆவது தாமரை மலர் மறைந்தது. அதுகண்டு திகைத்த ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு தமது கண்ணையே எடுத்து 1000ஆவது மலராக அர்ச்சித்தார். இதனால் அகமகிழ்ந்த ஸ்ரீ சிவபெருமான் ப்ரஸன்னமாகி ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணுவிற்கு சுதர்ஸனம் எனப்படும் சக்ராயுதம் வழங்கினார் என்று தலவரலாறு கூறுகிறது.

பக்தர் பசி போக்க படிக்காசு :

சகமனிதர் துன்பம் போக்குவதும் வழிபாடே என சமயப் பணியோடு, சமுதாயப் பணிகளையும் அருளாளர்கள் செய்து நமக்கு வழிகாட்டிய பல நிகழ்வுகள் உண்டு.

அவ்வகையில் ஸ்ரீ அப்பர் பெருமானும், ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தரும் திருவீழிமிழலை திருத்தலம் வந்தபோது அவ்வூரில் மழை பொய்த்து, விளைச்சல் இன்றி மக்கள் பசியால் வாடினர். இதுகண்ட அருளாளர்கள் மனம் நொந்தது.

அவர்கள் மகேசனிடம் வேண்ட ''பஞ்சம் தீரும் வரை திருக்கோயிலின் முன்புறமும் பின்புறமும் தினம் ஒரு பொற்காசு தருவோம். அதுகொண்டு பக்தர் பசிப்பிணி தீருக்கள் என்று ஈசன் அருளினார்.

அதன்படியே ஈசனும் காசுகள் அருள, அருளாளர்கள் பக்தர் பசிபோக்கி மகிழ்ந்தனர். இன்றும் திருக்கோயிலில் பரமேஷ்வரன் படிக்காசு அருளிய பீடங்களைக் காணலாம்.

சிறப்புக்கள் :

1. இத்திருக்கோயில் தல விநாயகர் ஸ்ரீ படிக்காசு விநாயகர் ஆவார்.
2. ஸ்ரீ கல்யாணசுந்தரரின் பாதத்தில் ஸ்ரீ விஷ்ணு தமது கண்ணை அர்ச்சித்த அடையாளம் இன்று காணலாம்.
3. ஸ்ரீ அப்பர், ஸ்ரீ சம்பந்தருக்கு படிக்காசு அருளி பக்தர் பசி போக்கிய தலம்.
4. ஸ்ரீ அப்பர், ஸ்ரீ சம்பந்தர் தங்கி திருப்பணி செய்த திருமடங்களை இன்றும் இங்கு காணலாம்.
5. கருவறை விமானம் (கோபுரம்) 16 சிங்கங்கள் தாங்கும்

வண்ணம் விண்ணிழி விமானம் என்று சிறப்பிக்கப்படுகிறது.

6. ஸ்ரீ சிவபெருமான் விண்ணிழி விமானத்தில் தாம் சீர்காழியில் இருக்கும் காட்சியை சம்பந்தருக்குக் காட்டியருளினார்.
7. திருக்கோயில் வௌவால் மண்டப கலைநயம் அபாரம்.
8. மிழலைக் குரும்பர் என்று வேடுவ பக்தர் தினம் விளாங்கனி வைத்து இறைவனை பூஜித்து அஷ்டமாசித்தி பெற்ற தலம்.
9. 23 திருமுறைப்பதிகங்கள் பெற்ற சிறப்பு வாய்ந்த தலம்.
10. திருவாவடுதுறை ஆதின இரண்டாவது குருமஹாசந்நிதானம் ஸ்ரீலஸ்ரீ மறைஞான தேசிகரின் மாணவர் ஸ்ரீ மெய்ஞ்ஞான முனிவரால் இத்திருக்கோயில் தலபுராணம் எழுதப்பட்டுள்ளது.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ நேத்ரார்ப்பணேஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ சுந்தர குஜாம்பிகை
தலமரம்	: விழுதி என்னும் சிறுசெடி
தீர்த்தம்	: ஸ்ரீ விஷ்ணு தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு, ரதிதேவி, வசிஷ்டர், காமதேனு, மனு முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ சம்பந்தர், ஸ்ரீநாவுக்கரசர், ஸ்ரீ சுந்தரர் முதலானோருடன் சேந்தனார் அருணகிரிநாதர் முதலான அருளாளர்களும் இத்தலத்து ஈசனுக்கும் பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளனர்.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ வீழிநாதேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருவீழிமிழலை - 609 505.
திருவாரூர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

04366-273050, 9443924825

அமைவிடம் :

திருவீழிமிழலை திருமுறைத் திருத்தலமானது

மயிலாடுதுறை-திருவாரூர் பாதையில் பேரளத்திற்கு அருகே உள்ள பூந்தோட்டம் என்னும் ஊரில் இருந்து சுமார் 10 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ சுந்தரகுஜாம்பிகா ஸமேத
ஸ்ரீ நேத்ரார்ப்பணேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1. Place of Publication	:	Salem - 636 001
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	D. Sivakumar
Nationality	:	Indian
Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4. Publisher's Name	:	M. Sridhar
Nationality	:	Indian
Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5. Editor's Name	:	M. Venkateswaran
Nationality	:	Indian
Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6. Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.05.2026. **M. Sridhar**
Signature of the Publisher

शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- मन भावन शैली
- सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- भाषा कौशल पर आधारित
- सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- सरल तथा शुद्ध भाषा
- छात्रों में रुचि उत्पादक
- अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक

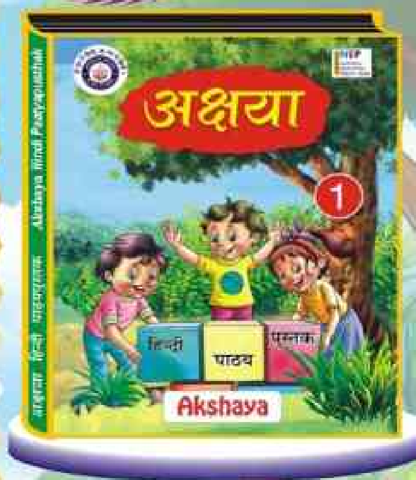

Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- Captivating storytelling
- Value-driven lessons
- Engaging book exercises
- Enhanced language proficiency
- Boosts creativity & critical thinking
- Lucid, effective language
- Sparks student curiosity
- Parent-friendly content
- The best teachers' Choice

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

SHABARI BOOK HOUSE
"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

Posted at Salem HPO 636 001. May-2026

Published on 5th May-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Trilingual Dictionary

Shabari Shabdha Saagar

Just ₹ 1000.00

1632 Pages

51,000 Words

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி

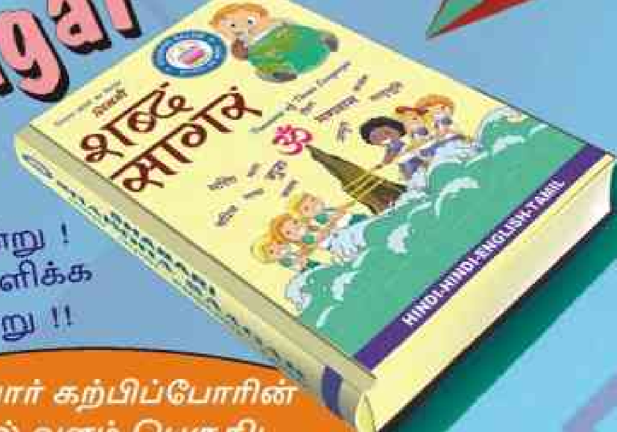

தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க
மிகவும் நன்று !!

கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட...
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட...

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/